Impact Factor 4.574

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Journal

VOL-V ISSUE-VIII Aug. 2018

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

हिंदी महिला साहित्यकार के साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श

प्रा. देवकांत फुलचंद गुरव
(शोधछात्र)
हिंदी विभाग – स्वा.रा.ति.म.वि.
नांदेड.

साहित्य में विमर्श एक महत्वपूर्ण विषय है। जीवन के उत्कृष्ट अनुभव और चिंतन से ही साहित्य का निर्माण होता है। यह मानव चेतना की अभिव्यक्ति करता है। पिछले कुछ दशक में हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन का व्यापक प्रस्फुटन एक अनूठी और ऐतिहासिक घटना है। यहाँ स्त्री लेखन एक सामाजिक सच्चाई और अस्मिता के संघर्ष की चुनौती के रूप में सामने आता है। इस साहित्य में स्त्री–विमर्श अस्मिता का वह आंदोलन है, जो हाशिए पर छोड़ दिए गए नारी अस्तित्व को फिर से केंद्र में लाने और उसकी मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करने का अभियान है। महिला लेखन के केंद्र में स्त्री अस्मिता का संघर्ष, अदम्य् जिजीविषा, स्त्री स्वातंत्र्य, देह और यौन उत्पीड़न के प्रति विद्रोह और स्वयं की पहचान के प्रति जागरूकता के साथ सामाजिक पहलुओं से जुड़े यथार्थ को भी देखा गया है।

महिला साहित्यकारों ने अपनें साहित्य में कटुता पीड़ा की भावनाओं में जकड़ी नारी का वर्णन किया है तथा दबी हुई स्त्री के मनोविज्ञान की व्याख्या से लेकर यथार्थपरक भोगे हुए सच को बड़ी सूक्ष्मता से व्यक्त किया है। इन सभी लेखिकाओं की कहानियों में जो परिवर्तन आया है वह समाज का आईना दिखाता है। विभिन्न संदर्भ कथ्यों को रूप देनेवाली प्रमुख लेखिकाएँ निम्न है, जिन्होंने स्त्री–विमर्श अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जिसमें मन्नू भंडारी, कृष्णा साबेती, मृदूलागर्ग , ममता कालिया, अलका सरावगी, मैत्रेथी पुष्पा, मेहरून्निसा परवेज आदि।

अलका सरावगी आज के समय की एक ऐसी कथा लेख्किा है, जिनके उपन्यास में मानवीय संवेदना का विशाल भांडार है। मानव के रूप में चित्रित नारी इनके कथा साहित्य का प्राण है। स्त्री विमर्श के प्रति अलका सरावगीने जो दृष्टिकोण अपनाया है, वह स्त्री विमर्श की परंपरा से हटकर नये रास्तों की खोज करता है। बड़ी कुशलता के साथ लेखिका सीमित मध्यमवर्गीय परिवेश में सांस लेती नारी का चित्रण करती है, जो कभी झुंझलाती, बौखलाती है, और कभी अपने प्रश्नों के अभावों से गूझती है तो कभी समझौता भी करती है। नारी की मानसिकता और उसकी स्थिति का चित्रण अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में अलग–अलग दृष्टीकोण से किया है। "स्त्रीवाद" और "स्त्री–पक्ष" के प्रश्नों को लेकर अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में जो विमर्श प्रस्तुत किया है। वह "स्त्री–विमर्श" का अलग ही रूप है। अलका सरावगी के समस्त कथा साहित्य में नरियों ने कथा वस्तु के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। "कलिकथा–वाया बाइपास" में नारी पात्रों द्वारा किया गया कथा विस्तार आत्याधिक महत्वपूर्ण है। इसमें स्त्री जीवन के अनेक पक्षों पर प्रभाव डाला है, संघर्ष करती स्त्री, धैर्य साहस करती स्त्री, शोषित पिड़ीत स्त्री आदि का वर्णन अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है, जिसमें "शेष कांदबरी", "एक ब्रेक के बाद", "कोई बात नहीं" आदी उपन्यास का समावेश है।

"रास्तो मे भटकते हुए" इस उपन्यास में मृणाल पांडेजी ने मंजरी के चरित्र के माध्यम से दया ममता, स्पष्टवादी, संघर्षशील नारी का चित्रण किया है, जो पत्रकार है और समाज में होनेवाले सभी अन्याय अत्याचारों को स्पष्ट करना चाहती है। इस उपन्यास में मंजरी ने बंटी नाम के बच्चे तथा उसके माँ के जीवन से संबंधित घटनाओं का पर्दाफाश किया है।

स्त्री विमर्श की दृष्टि से नासिरा शर्मा की कहानियाँ महत्वपूर्ण मानी जाती है। इन पर प्रेमचंद, मंटो, तबस्सुम आदि का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनकीं अधिकांश कहानियों के केद्रं में औरत है, जिन औरतों की संवेदना को व्यक्त करने की कोशिश की गयी है, वह भारतीय संदर्भ में उतनी ही प्रामाणिक दिखाई देती है। नासिरा शर्मा कहानियों में मुस्लिम समाज के भीतर स्त्रियों की दशा पर बेहतर ढंग से लिखा है। उन्होंने औरत के लिए "औरत" नामक किताब लिखी जिसमें कामगार स्त्रियों के संदर्भ में लिखा गया है। मुख्यतः नासिराजी निम्नवर्ग एवं कामकाजी औरत की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करती है।

कृष्णा सोबती जी अपनी साफ–सुधरी रचनात्मक और अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती है। इन्होंने हिंदी की कथा भाषा को अपनी विलक्षण प्रतिभा से अप्रतिम ताजगी और स्फूर्ति प्रदान की है। कृष्णा सोबती ने पचास के दशक से ही उपना लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था। इनकी पहली कहानी "लामा" थी। "बादलों के घेरे", "डार से बिछुरी", "तीन पहाड", "मित्रो मरजानी" आदी कहानी संग्रहों में सोबतीजीने नारी को अश्लीलता की कुंठित राष्ट्र को अभिभूत कर सकने में सक्षम अपसंस्कृति के बल–संबल के साथ ऐसा उभारा है कि साधारण पाठक हतप्रभ तक हो सकता है।

ममता कालिया समकालीन हिंदी जगत् की अग्रणी हस्ताक्षर है। ममता कालिया ने कहानी ,उपन्यास, कविता, नाटक, संस्मरण और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम का जादी बिखेरा है। उन्होंने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युध्दरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा है। अपनी रचना ओं में वह न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठ़ाती है, बल्कि उन्होंने उनके उत्तर देने की भी कोशिश की है। उन्होंने अपनी कथा–साहित्य में हाडमांस की स्त्री का चेहरा दिखाया है। अपने लेखन में युध्दरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा है।

मेहरून्निसा परवेज भारत की आधुनिक महिला साहित्यकार और कहानीकार है। उनकी कहानियों में पारंपारिक घरों की बंदिशे, महिलाओं के संघर्ष, आदिवासी आँचल की समस्याएँ बहुधा आती है। उनका पहला उपन्यास "आँखो की दहलीज" प्रकाशित हुआ था। उन्होंने कुछ कहानी संग्रह की रचना की है, जिनमें आदम और हक्वा, अलत–पुरूष, एक और सौलाब आदी।

मृदूला गर्गजी ने कथानक विविधता और विषयों के नएपन ने उन्हें अलग पहचान दी है। शायद यही वजह कि उनके उपन्यासों को समालोचकों की सराहना तो मिली ही, वे खूब पसंद भी किए गए है। मृदूलाजी पर्यावरण के प्रति, सजगता प्रकट करती रही है, तथा महिलाओ, बच्चों के हित में समाज के काम करती रही है। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलंबिया विश्वविदयालय में 1990 में आयोजित एक सम्मेलन में हिदी साहित्य में महिलाओं के प्रति भेदभाव विषय पर व्याख्यान भी दे चुकी है।

मन्नू, भंडारीने अपने "अन्तवर्शी" उपन्यास में वाना का चित्रण किया है। वाना इस नारी पात्र के द्वारा नारी की समाज में होनेवाली मर्यादा, संघर्षशीला को दिखाया है। वाना एक सहज स्वाभाविक स्वभाव की स्त्री है। जो शिवेश के साथ अपना संपन्न संपूर्ण जीवन जीना चाहती है। लेकिन वाना को जो प्रेम चाहिए था वह उसका पति शिवेश उसे नहीं देता। उसकी भावनाओं नही समझता उसे वह प्रेम राहूल से मिलता है। और वह शिवशे को छोड़ देती है। यहाँ वाना के द्वारा लेखिका ने पुरूष प्रधान संस्कृति के आगे नारी के साहस, धैर्य, कर्म, सहनशीलता का चित्रण किया है।

चित्रा मुदग्लजी ने अपने उपन्यास "आवां" के माध्यम से नमिता इस नारी पात्र के द्वारा स्वाभिमानी, कर्तव्यशील नारी का चित्रण किया है। नमिता किसी भी पुरूष के लिए क्षणिक सुख की उपभोग्य वस्तु बनना नहीं चाहती है। उसके जीवन में अपने परिवार की कई समस्याएँ है, जिसके कारण वह नौकरी भी करती है। लेकिन अपने आपको सिध्दार्थ जैसे घमंडी जो स्त्री को केवल उपभोग्य, अपने काम के लिए समझने वाले लोगों की असलियत को वह समझकर उनसे दूर रहती है। अपने जीवन को सुधारती है।

नमिता सिंह जी ने "अपनी सलीबें" नामक उपन्यास में आधुनिक जीवन से प्रेरित नारी पात्र नीलिमा प्रमुख है। माँ की परिस्थिती न होने के कारण भी नीलिमा को होस्टल में रखकर उसकी पढ़ाई करती है। ताकि उसे गरीबी कभी महसूस न हो। लेकिन इस बीच उसे प्यार हो जाता है और वह उस लड़के से शादी करती है। लेकिन लड़के की जाति का पता चलने के बाद वह उसे छोड़ देती है। लेकिन उसकी माँ उसे सही राह दिखाती है। लेखिका ने निलिमा जैसी शिक्षत नारी के माध्यम से बताया है कि उसने प्रेम और विवाह करने समय यह नही सोचा लेकिन अचानक इतनी सुसंस्कारवादी और खानदानी बन जाती है कि पति को छोड़ देती है। लेकिन माँ के समझााने के बाद वह पति के पास जाती है। इस उपन्यास में नमिता जीने दो विरोधी विचारों वाली स्त्री के बारे में बताया है।

इस प्रकार सभी नारी उपन्यासों में नारी का एक अलग दस्तावेज, विशेषता, समस्या, मानसिकता आदिका चित्रण मिलता है। स्त्री ईश्वर की अद्‌भूत सृष्टि है। स्त्री शक्ति, शील और सौंदर्य की मूर्ति है। पुराने जमानें से लेकर भारत में शक्तिपूजा की परंपरा रही है। स्त्री सशक्तिकरण की बात सदियों से चली आ रही है। और यही सशक्तिकरण उपन्यासों के माध्यम से भी व्यक्त होता दिखाई दे रहा है। स्त्री संधर्ष करते हुए आगे बढ़ रही है। उसके सामने अनेक चुनौतियाँ है उनका सामना भी बड़े धैर्य के साथ कर रही है। स्त्री – विमर्श अर्थात् स्वत्व को खोजने की प्रक्रिया है। अपनी पहचान शक्ति और सत्ता को जानने की कोशिश करते हुए स्त्री जागरण की बात उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त होती दिखाई देती हैं। उपन्यास समाज के साथ चलनेवाली साहित्यिक विधा है। साहित्यिक विधा में स्त्री को सही रूप में जानने पहचानने की कोशिश की गयी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) अंतिम दशक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श – डॉ.कृष्णा पोतदार
2) नारी विमर्श और अलका सरावगी का कथा साहित्य – डॉ. प्रीती त्रिवेदी
3) महिला उपन्यासकार – डॉ. मधु सिंह
4) महिला लेखन – स्त्री –आस्मिता का साहित्य – जनसत्ता
5) साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी – डॉ. मंगल कप्पीकेरे

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com